शिक्षण संस्थाओं में जीवन विज्ञान आवश्यक : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 19 अक्टूबर, 2010।

जीवन विज्ञान जीवन की श्रेष्ठ कला है। शिक्षण संस्थानों में काम करने वाले शिक्षकों का दायित्व है कि वे विद्यार्थियों के जीवन निर्माण का प्रयास करें तो बच्चे श्रेष्ठ नागरिक बन सकते हैं। शिक्षा के साथ जीवन विज्ञान का कार्य व्यवस्थित चलाया जाये, विद्यार्थियों का स्वभाव और आदतों में परिवर्तन हो सकता है। माता-पिता अपनी संतानों को स्कूलों में भेजते हैं उनके मन की यह आकांक्षा रहती है कि मेरा बच्चा शिक्षित बने, आजीविका के लिए सक्षम बने और साथ में संस्कारवान बने, यह इच्छा उनकी पूरी होती है तो शिक्षण संस्थान सफल होता है अन्यथा मैनेजमेंट, शिक्षक अथवा शिक्षार्थी में कोई कमी है।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने जीवन विज्ञान अकादमी संस्था सरदारशहर द्वारा आयोजित जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर में स्थानीय तेरापंथ भवन में व्यक्त किये।

जीवन विज्ञान का परिचय प्रस्तुत करते हुए प्रेक्षाप्राध्यापक जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल ने बताया जीवन विज्ञान जीने का व्यवस्थित ज्ञान है। जीवन विज्ञान जीने की वह कला है। जिससे विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है। जीवन विज्ञान के प्रयोगों से अनुशासन स्मरण शक्ति, कार्यक्षमता और परीक्षा में रिजल्ट अच्छा होता है। शिक्षक बंधुओं को प्रेरित करने वाले एसडीएम लोकेश सहल, अभयशील सोनी, ए.वी.ई.ओ के प्रयासों से कार्यक्रम सफल हुआ। शिक्षकों की पूर्ण उपस्थिति इस बात का द्योतक है कि उनमें जीवन विज्ञान के प्रति आकर्षण है, वे प्रशिक्षण प्राप्त कर स्कूलों में विद्यार्थियों को प्रेरित करे। कार्यक्रम का प्रारज़्भ मुनि नीरजकुमार द्वारा प्रस्तुत जीवन विज्ञान गीत से हुआ।

जीवन विज्ञान अकादमी सरदारशहर के कार्याध्यक्ष उदयजी दुगड़ ने स्वागत किया। शिक्षा में जीवन विज्ञान की उपादेयता पर अभयशील सोनी ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन सज़्तराज सुराणा ने किया, धन्यवाद ज्ञापन डॉ. एम.एल. मिन्नी ने किया।

प्रशिक्षण के दूसरे चरण में प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल के निर्देशन में हुआ। जीवन विज्ञान को कक्षा में किस तरह से विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया जाये, लगभग 125 शिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर लाभ उठाया और अनुभव किया ऐसे प्रशिक्षण सभी विद्यार्थियों के लिए होने चाहिए।